भारतीय संस्कृति वैश्विक शांति के लिए एक सार्वकालिक प्रासंगिक आधार

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भारतीय संस्कृति वैश्विक शांति के लिए एक सार्वकालिक प्रासंगिक आधार

प्रधान सम्पादक
डॉ० निशा सिंह
प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

एवं

सम्पादक
डॉ० धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना SAMPLE

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

भारतीय संस्कृति वैश्विक शांति के लिए
एक सार्वकालिक प्रासंगिक आधार

संस्करण : 2021
© सम्पादक
ISBN: 978-81-948850-8-5

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई सम्बंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE



भूमिका

विश्व की अनेक संस्कृतियों में भारतीय संस्कृति की एक ऐसी संस्कृति है, जो अत्यन्त प्राचीन भी है और प्रत्येक समय के प्रत्येक क्षेत्र में प्रासंगिक एवं नवीन भी है। परम्परा को नैरन्तर्य में स्वीकार करते हुए, सृष्टि की नूतन उपलब्धियों एवं विकास को आत्मसात करने के कारण यह संस्कृति चिरनवीनता को प्राप्त है। इसमें मानवीय जीवन का सम्पूर्ण चिन्तन एवं विकास समाहित है। यह राष्ट्रीय और वैश्विक परिवेश में अपना समन्वयात्मक स्वरूप धारण करती है। व्यापक दर्शन और अपरिमित ग्राह्यशक्ति के कारण यह विश्व की सभी संस्कृतियों में विशिष्ट और पृथक है।

भारतीय संस्कृति में व्यक्तिगत स्तर पर, त्यागमय शुद्ध चरित्र पर, सामाजिक स्तर पर सत्याचरण, सेवा और सहयोग भावना पर तथा शैक्षिक स्तर पर मूल्य शिक्षा पर बल दिया जाता है। इसका सम्बन्ध सम्पूर्ण प्रकृति के जीवन एवं विकास से है। सम्पूर्ण वसुधा को एक परिवार मानने वाली इस संस्कृति के मूल और प्रमुख प्रयोजन है– सम्पूर्ण पर्यावरण की शुद्धता एवं विश्व शान्ति। बाह्य प्रकृति एवं आन्तरिक प्रकृति दोनों की शुद्धता, दोनों के समन्वय और सामंजस्य पर यह संस्कृति बल देती है। हमारे आर्ष ग्रन्थों में प्रमुखता से माना जाता रहा है कि भारत की संस्कृति केवल भारत के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण सृष्टि के कल्याण से सम्बन्धित है। हम भारतवासी प्रार्थना किया करते हैं और कामना करते हैं कि सभी सुखी हों व सभी नीरोग हों। परिवर्तनशीलता होते हुए भी इसकी मूल धारा एक है, वह मूल धारा एकात्मबोध की है, समन्वय

की है, समरसता की है, सभी के आनन्द और सभी की शान्ति की है।

हमारे साहित्य ने मनुष्य को प्रकृति से जोड़ा और यह बोध कराया की प्रकृति की रक्षा ही संस्कृति की रक्षा है। प्रकृति में सृष्टि में निहित चेतना के विकास और संचरण को आगे बढ़ाती है, संस्कृति उसका भली–भाँति संरक्षण करती है। इस गतिशीलता की व्यवस्था का परिचय हमारा साहित्य कराता है। इसलिए संस्कृति का सीधा सम्बन्ध साहित्य से होता है। साहित्य में सहित का अभाव है और संस्कृति में भी सबके हित, परिमार्जन और समन्वय का भाव विद्यमान रहता है। मानवत्व से देवत्व तक पहुँचने का मूलमंत्र हमारे साहित्य और संस्कृति की देन है। हमारे प्राचीन राष्ट्रीय वेद और वेदांग कहलाये, उपनिषद एवं आरण्यक कहलाये, जो ज्ञान के साकार स्वरूप माने गये हैं। सम्पूर्ण सृष्टि की क्रमिक व्यवस्था और उसके नियमन की सहज प्रक्रिया का ज्ञान हमें वैदिक साहित्य से मिलता है। स्थान और काल की सापेक्षता में हमारी संस्कृति उसको ग्रहण करती है और मानव के हित के लिए जो भी श्रेयस्कर है, उस जीवन का दिशा ज्ञान कराती है।

हमारी संस्कृति जीवन के उच्चतम लक्ष्य की ओर हमें प्रेरित करती है, परन्तु आज की उपभोक्तावादी आयातित मानसिकता ने इस संस्कृति पर सीधे चोट की है। उपभोगतावादी सोच ने आज मानव को व्यक्ति से वस्तु बना दिया है और सामाजिकता, व्यवहार और परस्पर सहयोग को गिव एंड टेक अथवा क्रय–विक्रय, त्वरित लाभ का साधन बना दिया है। भारतीय संस्कृति समन्वय और सदाचरण, समरसता और सामंजस्य पर बल देती है। उपभोक्तावादी प्रकृति व्यक्तिगत, सामाजिक विकृतियों और सामाजिक कुरीतियों को बढ़ावा देती है तथा मनुष्य के आचार–विचार, शिक्षा, साहित्य, राजनीति सभी को प्रदूषित कर रही है। संस्कृति प्रकृति और विकृति के विषय में किसी ने सही कहा था– भूख लगना प्रकृति है। छीन–झपट कर खाना विकृति है और मिल–बाँट कर खाना संस्कृति है। आज इस उपभोक्तावादी विकृति ने पूरे राष्ट्र को प्रभावित कर दिया है। इससे साहित्य, शिक्षा और विज्ञान के भी व्यावसायीकरण होने के प्रयास हो सकते हैं।

आज पर्यावरणीय प्रदूषण एक वैश्विक समस्या बन गया है। हमारा सम्पूर्ण प्राकृतिक परिवेश अनेक प्रकार के प्रदूषण से ग्रस्त है। मानवीय नैतिक मूल्यों का द्रुतगति से क्षरण हो रहा है, उच्च भावबोध और स्तरीय सृजन का अवमूल्यन हो रहा है। जिस संस्कृति ने इच्छाओं पर नियंत्रण रखने के लिए यम–नियम आदि का सन्धान किया था हम आज उसका ही विरोध कर रहे हैं। सीमित संसाधन होते हुए भी असीम इच्छाओं का वरण कर रहे हैं। आज मनुष्य की इच्छाएँ और लालसाएँ इतनी बढ़ गयी हैं कि विभिन्न आविष्कारों, संसाधनों के द्वारा ईश्वरीय व्यवस्था को, प्रकृति के सौन्दर्य, जल के पवित्र संसाधनों को प्रदूषित किया जा रहा है। जिन साँसों पर पूरा जीवन निर्भर है, वायु प्रदूषण से उनको भी समाप्त करने का प्रयास हो रहा है। जब हमें विनाश का कगार दिखने लगा तो हम अपनी जड़ों की ओर उन्मुख होने लगे। यह हमारे सांस्कृतिक चिंतन का एक सकारात्मक पक्ष है। अपने शास्त्र, आयुर्वेद और शुद्ध प्राकृतिक पदार्थों की ओर हमारा रुझान बढ़ने लगा। आज समझ में आने लगा कि हमारी संस्कृति की जड़ें मजबूत और उपयोगी हैं। हमें पत्तों को नहीं, इन्हीं जड़ों को सींचना है और मानव तथा मानवता को जीवित बनाये रखना है।

यदि हम भारतीय संस्कृति के भौतिक पक्ष के साथ आध्यात्म पक्ष की बात करें तो हमें चमत्कृत होना पड़ता है। इस सृष्टि की सबसे सुन्दर रचना मानव है। सभी शाश्वत मूल्य मानव से सम्बन्धित है, मानव द्वारा संचालित होते हैं और मानव की उन्नति में सहायक होते हैं। विचार, विवेचन एवं आचरण– ऐसे त्रिकरण हैं, जो इन मूल्यों से जुड़े हैं और जिनके सामंजस्य और सही क्रियान्वयन से मनुष्य पूर्णता को प्राप्त होता है। मनुष्य शरीर, मन और आत्मा का समुच्चय है। भारतीय संस्कृति की कार्यकारण श्रृंखला का चिंतन इसी समुच्चय पर आधारित है। इस समुच्चय का मूलाधार है प्रेम। सृष्टि के सभी पदार्थ, परस्पर विरोधी होकर भी प्रेम के एक सूत्र में बँधे हुए हैं। प्रकृति और मानव चेतना के विकास की यही स्थिति है।

सौन्दर्य, आनंद, शांति इसी समन्वय के परिणाम हैं। अपने ही शब्दों को पुनः प्रस्तुत करना यहाँ प्रासंगिक और समीचीन लगता है। प्रकृति और मनुष्य दोनों पंचभूतात्मक अस्तित्व में रहते हैं और प्रेम से आनंद तक की यात्रा तय करते हैं। प्रकाश चाक्षुष– सौन्दर्य से, ध्वनि– वाणी सौन्दर्य से और गति जीवन के शाश्वत आनन्द से सम्बंधित है। चरैवेति का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति का मूलमंत्र है। जब मनुष्य श्रेष्ठ संकल्प धारण कर, श्रेष्ठ प्रयोजन के लिये गतिशील होता है तब जीवन और जगत में सर्वत्र–सर्वदा सौन्दर्य का, आनंद का साम्राज्य स्थापित हो जाता है।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति अपने स्वरूप और अपने प्रयोजन में संस्कृति का ही पर्याय है। उच्च शिक्षा को समर्पित इस संस्था द्वारा संस्कृति जैसे प्रासंगिक विषय और भारतीय परिवेश के लिए अत्यंत उपयोगी विषय पर विभिन्न विद्वानों के तथा अध्ययनरत जिज्ञासु विद्यार्थियों के आलेखों का ग्रन्थ रूप में संकलन प्रकाशित होने जा रहा है, यह प्रसन्नता का विषय है। सभी को बधाई एवं अनन्त मंगलकामनाएँ !

डॉ० मिथिलेश दीक्षित
अध्यक्ष माधवी फाउंडेशन
जी–91, सी, संजय गान्धीपुरम
लखनऊ–226016 (उ०प्र०)

सम्पादकीय

संस्कृति किसी भी समाज की उत्कृष्टता का बोध कराती है। संस्कृति मानवीय सृजन की उन्नति, विकास के यात्रा क्रम, मानसिक व आध्यात्मिक विचारों द्वारा नवोन्मेष की क्षमता का परिचायक है। संस्कृति हमारे जीवन जीने की कला है। यह हमारे जीवन का वह संगीत है जो विरासत के रूप में हमारे पूर्वजों से मिला है और पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता चला आ रहा है। संस्कृति जीवन रस है, ह्यस–परिह्यस है, मानसिक तुष्टि है, जीवन संगीत है, उद्‌भव व उत्कृष्टता का गान है, समाज का मानवता के लिए किया गया सामूहिक अवदान है, राष्ट्र के चरित्र निर्धारण का मानकीय बिंदु है। संस्कृति मानवीय मूल्यों का पोषण करने वाली वह समाज सम्मत प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवता पोषित, विकसित, संवर्धित और संरक्षित होती है। संस्कृति के अंतर्गत हमारा खान–पान, जीवन शैली, रीति–रिवाज, लोक परम्परा, तीज–त्यौहार, वैज्ञानिक नवोन्मेष, धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, कलाएं, मानसिक व आध्यात्मिक वैचारिक अवदान आदि समाहित है। एक प्रकार से संस्कृति मानव द्वारा मानसिक क्षेत्र में की गई प्रगति का परिचायक है। संस्कृति आत्म संतुष्टि का कारक है।

भारत विश्व के अति प्राचीन एवं महानतम संस्कृति वाला देश माना जाता है। प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु की उपमा से नवाजा गया था। हमारे देश को यह गौरव, यहाँ के सनातन ऋषि–मुनियों द्वारा विकसित व स्थापित महान व समृद्ध संस्कृति के कारण प्राप्त हुआ था। वैश्वित स्तर पर समय–समय पर अनेक संस्कृतियों का विकास हुआ।

SAMPLE

काल का प्रवाह ऐसा रहा कि उच्चता के शिखर पर पहुँचकर वे विनष्ट भी हो गईं। किन्तु भारतीय संस्कृति विश्व की एकमात्र ऐसी संस्कृति है जो आज भी जीवित है और सतत गतिमान है।

परिवर्तन एक शाश्वत सत्य है। भारतीय संस्कृति ने भी अपनी विकास यात्रा में अनेक परिवर्तनों को देखा, किन्तु अपनी मूल प्रकृति पर कभी को नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ने दिया। भारतीय संस्कृति सदा गुणग्राही रही है। वाह्य प्रभावों से बिना प्रभावित हुए भारतीय संस्कृति ने उनमें विद्यमान सकारात्मक प्रभावों को सहर्ष स्वीकार किया, सभी को आगे बढ़ कर गले लगाया और सभी को सम्मान देकर गरिमापूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिया। सह–अस्तित्व, सहिष्णुता, स्वीकार्यता जैसे गुणों से संपन्न भारतीय संस्कृति ने विश्व बंधुत्व की भावना पर बल देते हुए सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानते हुए वसुधैव कुटुम्बकम का उद्घोष किया। अतिथि देवो भव की भावना के साथ दूसरे देश और संस्कृति से आये लोगों को अपनाकर अपनी उदारता, व्यापकता और विशाल हृदय का परिचय दिया। सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया को अपना मूल मन्त्र बनाकर अपनी लोक मंगल कामना से ओतप्रोत सर्व कल्याणकारी छवि की झलक प्रस्तुत की। भारतीय संस्कृति भौगोलिक सीमाओं से परे एक ऐसी संस्कृति है जिसमे वैश्विक शांति और कल्याण का भाव निहित है, जिसके मूल में समग्र मानवता है और मानव मात्र ही नहीं बल्कि सभी प्राणियों सहित सम्पूर्ण प्रकृति के प्रति सेवा, आदर, समर्पण और सौहार्द का बोध है।

आज हमारा भारतीय युवा पाश्चात्य जीवन शैली को अपनाने के लिए आतुर है। उसे भारतीय संस्कृति के मूल्यों में पिछड़ापन नजर आता है। पश्चिम की विलासितापूर्ण जीवनशैली भारतीय समाज को आज आकृष्ट कर रही है। किन्तु कोरोना महामारी के कारण वैश्विक स्तर पर जो परिस्थितियां बनी है, उसमे भारतीय संस्कृति की ओर पश्चिमी जगत सहित सम्पूर्ण विश्व मुड़ रहा है। इन परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति की महत्ता और प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध हो जाती है। किन्तु बड़े खेद का विषय है कि भारतीय युवा अभी भी अपनी संस्कृति से दूर है।

आज समाज और समाज के सभी जिम्मेदार व्यक्तियों का यह कर्तव्य है कि वह वर्तमान पीढ़ी और आनेवाली भावी पीढ़ी को भारतीय संस्कृति, उसके मूल तत्वों और उसकी महत्ता से अवगत कराएं। प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य बनता है कि वह भारतीय संस्कृति को अपने जीवन में आत्मसात करते हुए उसकी महत्ता और प्रासंगिकता को समझे ताकि आने वाले समय में भारत अपना खोया हुआ गौरवपूर्ण स्थान पुनः प्राप्त कर सके। भारतीय संस्कृति– वैश्विक शांति के लिए एक सार्वकालिक प्रासंगिक आधार नामक शीर्षक से सम्पादित यह पुस्तक इसी दिशा में एक लघु प्रयास मात्र है। प्रस्तुत सम्पादित पुस्तक में भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित विभिन्न बिंदुओं पर शोध आलेखों का संकलन किया गया है। यह पुस्तक भारत के विभिन्न प्रदेशों से प्राप्त कुल आलेखों की संचयिका है।

अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सही लेखकों को धन्यवाद और आभार। विभिन्न लेखकों के भारतीय संस्कृति के विषय में अभिव्यक्त इन विचारों को पुस्तककार रूप देने के लिए अखंड पब्लिशिंग हाउस का भी धन्यवाद एवं आभार। प्रस्तावित विचार को पुस्तककार रूप देने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने सभी सहयोगियों व आत्मीय स्वजनों को भी हृदय से आभार सहित धन्यवाद।

इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय संस्कृति व उसकी महत्ता और प्रासंगिकता को वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। निश्चित रूप से यह पुस्तक भारतीय संस्कृति में रूचि रखने वाले अध्येताओं और शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रधान सम्पादक
डॉ० निशा सिंह
प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ
प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर,
गाजियाबाद।

सम्पादक
डॉ० धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ
प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर,
गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE

सहायक–सूची

1. **डॉ0 निशा सिंह प्राचार्य,** मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।
2. **डॉ० धीरज सिंह,** विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कालेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहननगर गाजियाबाद।
3. **डॉ० शारदा प्रसाद,** अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, रामगढ़ महाविद्यालय रामगढ़, झारखण्ड।
4. **डॉ० विभा लक्ष्मी,** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, स्वामी विवेकानंद सुभारती यूनिवर्सिटी, मेरठ।
5. **डॉ० सरोज बाला श्याग विश्नोई,** सहायक प्राध्यापक, शा. विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़ छ.ग. भारत।
6. **डॉ० बबिता सिंह,** असिटेन्ट प्रोफेसर–संस्कृत विभाग, चौ0 चरण सिंह पी. जी. कालेज, हेवरा, इटावा।
7. **डॉ० भावना सिंह,** असिस्टेट प्रोफेसर, श० मं० पा० रा० मं० स्नातकोत्तर महाविद्यायल, मेरठ।
8. **डॉ० प्रमिला मिश्रा,** सहायक आचार्या, संस्कृत विभाग, जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उ.प्र.।
9. **डॉ० मनीषा सिंह,** असिस्टेंट प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

SAMPLE

10. **डॉ० अरुणा भारद्वाज,** प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग, मेवाड़ कॉलेज, वसुंधरा।

11. **फत्तााराम नायक,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)।

12. **श्रीमती हरीतिमा दीक्षित,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, गाजियाबाद।

13. **सुशील कुमार,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, एस.सी.डी. के. खोला कॉलेज ऑफ एजुकेशन, दिनेशपुर, (उधम सिंह नगर), उत्तराखण्ड।

14. **रविकांत वर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

15. **राजेश कुमार सिन्हा,** शोध–छात्र, (इतिहास विभाग), शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय उज्जैन (म0प्र0)।

16. **संजय कुमार शुक्ला,** राजनीति विभाग, शास्त्रजीवाजी, विश्वविद्यालय ग्वालियर, ग्वालियर मध्यप्रदेश।

17. **रजनी शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपार्टमेंट, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

18. **सीमा शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपार्टमेंट, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

19. **Dr. Subodh Bala Gupta,** Professor, (Deptt. Of Education), MCPS, GZB.

20. **Dr. Santosh Sharma,** Professor, Faculty of Education, Director Directorate of Distance Education, Swami Vivekanand Subharti University Meerut.

21. **Dr. Sonal Sisodia,** Principal, Daly College of Business Management, Indore.

22. **Ms. Ankita Masih,** Assistant Professor, Guru Nanak College of Education, New Delhi.

SAMPLE

23. **Dr. Vidyapati,** Head, Department of Education, Ewing Christian Post Graduate College (An Autonomous Constituent College of Central University of Allahabad), Prayagraj.
24. **Dr. Ritu Mathur (Mitra),** Associate Professor of History, School of Social Sciences, Netaji Subhas Open University, Kolkata, West Bengal.
25. **Dr. Kiran Joshi,** Assistant professor, Modern College of Professional Studies, Mohan Nagar, Ghaziabad.
26. **Dr. Meenakshi Panchal,** Asst. Prof. Deptt. Of Economics, Pacific college of Social Sciences & Humanities, Pacific University, Udaipur.
27. **Dr. Smritikana Ghosh,** Assistant Professor, Head Department of Psychology, Radha Govind University, Ramgarh, Jharkhand.
28. **Dr. Vandana Sharma,** Assistant Professor, Department of English, JKP PG College Muzaffarnagar.
29. **Dr. Nidhi Rana,** Assistant Professor, Department of English, Post Graduate Government College for Girls, Sector-42, Chandigarh.
30. **Dr. Shaifali Agarwal,** Assistant Professor, Department of Psychology, G.D.H.G.College, Moradabad.
31. **Dr. Reena Agarwal,** Assistant Professor, Ganpati Institute of Science and Technology, Mohan Nagar , Ghaziabad.
32. **Kartick Chandra Barman,** Assistant Professor, Department of History, Krishna Chandra College, Hetampur, Birbhum,West Bengal.
33. **Ms. Monika Bansal,** Assistant professor, Modern College of Professional studies.
34. **Neha Bansal,** Assistant professor, Modern College of Professional studies.
35. **Lata Satagopan,** B.Sc.B.Ed,M.A(Eng), Faculty Sacred Heart Teachers Training Institute, Jayanagar, Bangalore.
36. **Kankana Devi,** Lecturer, Barpeta B.T. College.

SAMPLE

37. **Anangahana Das,** Research scholar, Department of Education, Dibrugarh University, Assam
38. **Surya Prakash Pathak,** Research Scholar, Department of Sociology, FSS, Banaras Hindu University, Varanasi, 221005.
39. **Satvinder Kaur Saini,** Research Scholar, B.P.S.I.T.T.R. Women University, Khanpur Kalan, Sonipat.
40. **Mayank Tomar,** Research Scholar History, Mewar University.
41. **Rabia Khanam,** PhD Scholar (English), Mewar University, Chittaurgarh, Rajasthan.
42. **Sonia Kumari,** Research Scholar, BPS Women University, Khanpur Kalan, Sonepat.
43. **Urna Bhattacharjee,** M.Phil Scholar, Education Department, Calcutta University.
44. **Rohit Singh Tomar,** B.Ed. Scholar, Govt. Raza P.G College, Rampur, Uttar Pradesh.

SAMPLE

विषय–सूची

	भूमिका	v
	सम्पादकीय	ix
	सहायक–सूची	xiii
1.	भारतीय संस्कृति एवं वर्तमान परिदृश्य में भारतीय रीति–रिवाज व परम्पराएं *—डॉ0 निशा सिंह*	1
2.	प्रकृति एवं पर्यावरण संरक्षण के आलोक में भारतीय संस्कृति *—डॉ0 धीरज सिंह*	11
3.	भारतीय संस्कृति और विश्वशांति *—डॉ0 शारदा प्रसाद*	24
4.	भारतीय संस्कृति की विशेषताएं तथा वर्तमान में प्रासंगिकता *—डॉ0 विभा लक्ष्मी*	33
5.	भारतीय विरासत विश्व की समृद्धतम विरासत के रूप में *—डॉ0 सरोज बाला श्याग विश्नोई*	41
6.	भारतीय संस्कृति में यज्ञ की महत्ता *—डॉ0 बबिता सिंह*	49
7.	भारतीय सांस्कृतिक मूल्य के संचारण में अध्यापक शिक्षा की भूमिका *—डॉ0 भावना सिंह*	58

SAMPLE

8. कोविड–19: भारतीय सांस्कृतिक चेतना 67
—*डॉ0 प्रमिला मिश्रा*

9. भारतीय संस्कृति के मूल्य 76
—*डॉ0 मनीषा सिंह*

10. भारतीय संस्कृति – परिचय, विशेषता एवं महत्व 86
—*डॉ0 अरुणा भारद्वाज*

11. भारतीय संस्कृति के संवाहक शील लोकगीत : बदलते परिवेश में 98
—*फत्ताराम नायक*

12. वर्तमान परिवेश में भारतीय संस्कृति एवं मूल्य परक शिक्षा की प्रासंगिकता 107
—*श्रीमती हरीतिमा दीक्षित*

13. भारतीय संस्कृति और विश्वबन्धुत्व 114
—*सुशील कुमार*

14. भारतीय संस्कृति : एक विरासत 126
—*रविकांत वर्मा*

15. विशिष्ट सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की अद्भुत परम्परा 'चित्रगुप्त पूजन' 137
—*राजेष कुमार सिन्हा*

16. भारतीय संस्कृति, परिचय, विशेषता और महत्व 146
—*संजय कुमार शुक्ला*

17. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में पर्यावरण संरक्षण 157
—*रजनी शर्मा, सीमा शर्मा*

18. Indian Culture and Environment Conservation 165
—*Dr. Subodh Bala Gupta*

SAMPLE

19. Indian Culture: Introduction, Characteristics and Importance 173
—Dr. Santosh Sharma

20. Contactless Indian greeting 'Namaste': A panacea in Covid-19 182
—Dr. Sonal Sisodia

21. Indian Culture and Environment 191
—Ms. Ankita Masih, Dr. Vidyapati

22. Ancient Indian Scientific Culture: Eminent Achievements of Aryabhata 199
—Dr. Ritu Mathur (Mitra)

23. Scientific Perspective of Indian Cultural 208
—Dr. Kiran Joshi

24. The Culture of India : Agriculture point of view 216
—Dr. Meenakshi Panchal

25. Values in Indian Culture 225
—Dr. Smritikana Ghosh

26. Indian Culture and Philosophy: The Very Foundation of Rabindranath Tagore's Gitanjali 234
—Dr. Vandana Sharma

27. Indian Mythologies and Symbol of the Silent Woman: Re-locating Silence in the Modern Re-telling of Myths 243
—Dr. Nidhi Rana

28. Hinduism – Culture, Beliefs and Tradition 254
—Dr. Shaifali Agarwal

29. Environment and The Way Forward with Sustainable Development in India 263
—Dr. Reena Agarwal

30. The Indian Culture and Its Impact on World Civilization: A Study on Historical Perspectives 271
—Kartick Chandra Barman

31. Indian Culture and Heritage 282
—Ms. Monika Bansal, Neha Bansal

ARTE SAMPLE

32. Significance of Festivals in Indian Culture 294
—*Lata Satagopan*

33. Bihu Festival and Its Role in Cultural Bonding in Assam 303
—*Kankana Devi*

34. Impact of Education in the Process of Cultural Change 310
—*Anangahana Das*

35. Hindu Fairs and Festivals: Indian Culture as the Social Capital 318
—*Surya Prakash Pathak*

36. Indian Culture and Technical Advancement 326
—*Satvinder Kaur Saini*

37. Mahatma Gandhiji's View on Culture and the impact of West on Indian Culture 336
—*Mayank Tomar*

38. Dialectics of Indian Culture, Enigma and Evolution: A Critical Perspective 343
—*Rabia Khanam*

39. Indian Culture: A Study of M.T. Vasudevan Nair's Bhima: Lone Warrior 352
—*Sonia Kumari*

40. Higher Educational Institutions Enriched Indian Culture in Ancient India 360
—*Urna Bhattacharjee*

41. India's Pluralistic Culture and its Role in the Development of Cultural Coherence 368
—*Rohit Singh Tomar*

TEXT SAMPLE